सभी विधानसभा प्रत्याशियों के नाम मज़दूरों की ओर से खुला पत्र

मान्यवर

आप चाहे भाजपा के प्रत्याशी हों, या कांग्रेस के चाहे इनेलो के प्रत्याशी हों या हजकां के, चाहे गुमनाम दलों के प्रत्याशी हों या फ़िर निर्दलीय, यह पत्र आप सबको संबोधित है।

आप इन चुनावों में मज़दूर बस्तियों में मज़दूरों के पास उनका वोट पाने के लिए जा रहे हैं। आप चाहते हैं कि मज़दूर आपको वोट दें। आप हर तरह से खुद को उनका हितैषी भी घोषित कर रहे हैं। ऐसे में कुछ बातें आपसे करना जरूरी हो जाता है।

सारे देश के मज़दूरों की तरह हरियाणा के और खासकर फ़रीदाबाद के मज़दूरों के हालात से आप परिचित ही होंगे। यदि आप परिचित नहीं हैं तो निम्न बातों पर जरूर गौर करें।

* मज़दूरों के लिये बने हुए श्रम कानून किसी भी फैक्ट्री में लागू नहीं हो रहे हैं। यह प्रशासन और श्रम विभाग की जानकारी में और उनकी मिलीभगत से हो रहा है।
* फैक्ट्री मालिक ज्यादातर मज़दूरों को गुमनाम कंपनियों के नाम से ठेके पर रखते हैं और फैक्ट्री रजिस्टर में उनकी संख्या वास्तवित संख्या की तिहाई या चौथाई ही दिखाई जाती है।
* किसी दुर्घटना की स्थिति में मालिक की पहली कोशिश मज़दूर को अपनी फ़ैक्ट्री का मज़दूर मानने से इंकार करने की होती है।
* सारे ही ठेके व कैजुअल मज़दूरों से 8 के बदले 12 घंटे काम कराया जाता है और ओवर टाईम का भुगतान सिंगल की दर से किया जाता है। अक्सर ही स्थाई मज़दूरों की ड्यूटी भी 12 घण्टे की होती है।
* केवल थोड़े से स्थाई मज़दूरों को छोड़कर बाकी को ई एस आई, फण्ड, बोनस, छुट्टियों की सुविधा नहीं दी जाती या फ़िर इसमें गोलमाल किया जाता है।
* महिलाओं से भी 12 घण्टे काम कराया जाता है और उन्हें न्यूनतम मज़दूरी भी नहीं दी जाती। उनकी तनख्वाहें पुरुष मज़दूरों की तीन-चौथाई या उससे भी कम होती है।
* मज़दूर जब इन श्रम कानूनों के उल्लंघन के ख़िलाफ़ एकजुट होने और यूनियन बनाने का प्रयास करते है तो पुलिस प्रशासन और श्रम विभाग की मदद से इसे भी असफल कर दिया जाता है। नेतृत्वकारी मज़दूरों को अपनी नौकरी से भी हाथ धोना पड़ता है।
* मज़दूर जब इन श्रम कानूनों के उल्लंघन के ख़िलाफ़ संघर्ष में उतरते हैं तो उन्हें मालिकों के गुण्डों और पुलिस की लाठियों का शिकार होना पड़ता है। श्रम-विवादों का निपटारा अब श्रम विभाग में नहीं बल्कि पुलिस थाने में होता है।
* मालिकों और उनके गुण्डों तथा पुलिस-प्रशासन और श्रम विभाग के इस गठजोड़ ने मज़दूरों को गुलामों की स्थिति में ढकेल दिया है। इसे किसी भी फैक्ट्री और किसी भी मज़दूर बस्ती में महसूस किया जा सकता है। मज़दूर बस्तियां तो बुनियादी नागरिक सुविधाओं से वंचित नरक का दूसरा रूप है।

जैसे मज़दूरों की यह भयानक स्थिति ही काफ़ी न हो, इसे और भयानक बनाने के लिये नयी मोदी सरकार कदम उठा चुकी है। वह मालिकों द्वारा श्रम कानूनों के उल्लंघन को रोकने के बदले श्रम कानूनों को ही बदल कर उन्हें एकदम प्रभावहीन बनाने की दिशा में बढ़ चुकी है। जिससे मालिको पर लगा हुआ कोई भी अंकुश समाप्त हो जाये। उन्हें हर तरह की मनमानी करने की छूट मिल जाये।

श्रम कानूनों में परिवर्तन की कोशिश पिछले बीस सालों से सारी ही सरकारें करती रही हैं। चाहे वह कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार हो चाहे भाजपा के नेतृत्व वाली हो या फ़िर तीसरे मोर्चे की। देश के सारे ही पूंजीपति, खासकर टाटा-बिड़ला, अंबानी-अदानी जैसे बड़े पूंजीपति इसकी लगातार मांग करते रहे हैं। सरकारों ने छोटे-मोटे परिवर्तन किये भी पर मज़दूरों के प्रतिरोध के चलते वे ज़्यादा आगे नहीं बढ़ पाई। अब मोदी सरकार ने सारी सीमाएं तोड़ देने का फ़ैसला किया है।

मोदी सरकार की कैबीनेट ने श्रम-कानूनों में जिन परिवर्तनों को मंजूरी दी है उनमें प्रमुख इस प्रकार है:-

* मज़दूरों के काम घंटों को बढाकर व्यवहारत: बारह घण्टे कर देना और छुट्टियों की संख्या घटा देना।
* श्रम कानूनों से छूट वाली फैक्टरियों का आकार बढाकर 10-20 मज़दूरों यानी व्यवहारत: पचास या सौ मज़दूरों की फैक्टरियों तक कर देना।
* स्थाई मज़दूरों को भी ठेकेदारी मज़दूरों की पांत में ढकेल देना।
* महिलाओं से रात की पाली में काम कराने की छूट देना यानि मालिकों-प्रबन्धकों द्वारा न केवल उनका शोषण करने बल्कि उन्हें अपनी हवस का शिकार बनाने की छूट दे देना।
* एक अखिल भारतीय न्यूनतम वेतन घोषित कर वास्तव में न्यूनतम वेतन को भी गिरा देना।
* अपरेन्टिस के नाम पर मज़दूरों से तीन साल तक बेगार कराना।
* मज़दूरों द्वारा संगठन बनाने और संघर्ष करने को कठिन या लगभग असंभव बना देना।

मान्यवर,

आप समझ ही सकते हैं कि इस तरह के परिवर्तनों के बाद मज़दूरों का क्या हाल होगा? यदि फ़िर भी आपको समझने में कठिनाई आ रही है तो आप को जाकर एक दो दिन किसी झुग्गी बस्ती में गुजारने चाहिए।

मान्यवर,

आप चाहते हैं कि मज़दूर आपको वोट दें। लेकिन आपको वोट देने से पहले आपके बारे में फैसला करने के लिये मज़दूर 'जवाब दो, हिसाब दो' के तहत आपसे कुछ सवाल करना चाहते हैं।

वे जानना चाहते हैं कि आज तक आपने मज़दूरों के लिये क्या किया है? आपने मज़दूरों के ख़िलाफ़ कार्यरत मालिक, पुलिस-प्रशासन और श्रम विभाग के गठजोड़ के खिलाफ़ क्या संघर्ष किया है? आपने मज़दूरों के अपने मालिकों के ख़िलाफ़ संघर्ष में कितनी भागेदारी की है और कितनी बार लाठियां खाई हैं या जेल गये हैं? आपने कितना जीवन मज़दूर बस्तियों में गुजारा है तथा आपका जीवन स्तर मज़दूरों से इतना ऊपर क्यों है? आपकी आय का वास्तविक स्रोत क्या है?

यदि आप भाजपा या कांग्रेस के प्रत्याशी हैं तो आपसे सवाल बनता है कि आपने अपनी पार्टी की मज़दूर विरोधी नीतियों या कार्रवाइयों के विरोध में क्या आवाज उठाई है? या कि आप इन कार्रवाईयों से सहमत हैं? यदि आप इनेलो, हजकां, या गुमनाम दलों से है तो आपसे यह सवाल बनता है कि वे इन कार्रवाईयों में कांग्रेस-भाजपा से कहां भिन्न हैं? इस मामले में क्यों न आपके दल को भी कांग्रेस-भाजपा का छोटा भाई माना जाये जो मज़दूरों को लूटने-खसोटने में मालिक पूंजीपतियों की हर तरह से मदद करते हैं।

इंकलाबी मज़दूर केन्द्र सभी मज़दूर साथियों का आह्वान करता है कि अपनी बस्ती में आने वाले विधानसभा प्रत्याशियों से उपरोक्त सवाल जरूर करें। साथ ही वे सबसे बढकर यह सवाल करें कि क्या प्रत्याशी वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त कर मज़दूरों मेहनतकशों की समाजवादी व्यवस्था के पक्ष में है जिसमें न तो निजी सम्पत्ति होगी और न ही मुनाफ़ा। जिसमें जो काम करेगा वह खायेगा और मुनाफ़ा खोर-हरामखोर जहन्नुम में जायेंगे।

यह सबसे जरूरी सवाल है क्योंकि सात दशकों के भारत के पूंजीवाद ने अंधों को भी दिखा दिया है कि पूंजीवादी व्यवस्था में मज़दूर-मेहनतकश पूंजीपतियों के गुलाम ही होते हैं और उनका जीवन नरक बना रहता है

सभी मज़दूरों की ओर से
इंकलाबी मज़दूर केन्द्र
संपर्क 9999946920

blog : www.inqlabimazdoorkendra.blogspot.com

थाना एन आई टी बना समझौते की दुकान

फ़रीदाबाद (म.मो.) अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने की अपेक्षा थाना एन आई टी रिश्वतखोरी एवं समझौते की दुकान बनता जा रहा है।

दिनांक 16 सितम्बर को शाम 7 बजे 5 एम/22 में रहने वाले मनीष की 10 वर्षीय बेटी पलक को पड़ोस में रहने वाले अजय कुमार के बेटे हार्दिक ने खेलने वाले क्रिकेट बैट से मारा जिस पर पलक की दादी अजय कुमार की पत्नी इंदू कुमारी को उसके बेटे की शिकायत करने गई। वहां पर इंदू कुमारी व उसकी सास सीता देवी ने पलक व उसकी दादी के साथ गाली-गलौच व धक्का-मुक्की शुरू कर दी जिसकी जानकारी मनीष ने फ़ोन कर अजय कुमार को दी।

थोड़ी देर में अजय कुमार व उसके कुछ साथी घर पहुंचे और इंदू व अपनी मां सीता देवी को समझाने की जगह मनीष व उसके परिजनों के साथ मार-पीट व शोर-शराबा करना शुरू कर दिया। मजबूर होकर मनीष ने थाना एन.आई.टी. प्रभारी को फ़ोन कर सूचना दी एस.एच.ओ. भारत-भूषण ने ए.एस.आई. कैलाश को मौके पर भेजा। ए एस आई ने बेटी पलक का मेडीकल करवाने के लिए कहा। मेडीकल करवाने के बाद ए.एस.आई. कैलाश ने अजय कुमार को फ़ोन कर थाने में आने के लिये कहा।

थाने में अजय कुमार अपने साथ करीब आधा दर्जन युवकों के साथ पहुंचा। थाने के बाहर ही अजय व उसके साथ आए युवकों ने मनीष को देख लेने की धमकी दी। ए.एस.आई. कैलाश ने मनीष की दरखास्त पर अजय कुमार पर कार्यवाही करते हुए कागज़ात तैयार किये। अजय की जामातलाशी आदि लेकर उसकी गिरफ़्तारी डालने की बात कह कर ए एस आई ने मनीष को जाने के लिये तथा कल सुबह आकर एफ आई आर की नकल ले जाने को कहा। यह सारी कार्यवाही करीब साढे नौ बजे तक पूरी हो चुकी थी।

इसके बाद रात करीब 12 बजे ए एस आई ने फ़ोन करके मनीष को थाने बुलाया। वहां पहुंचने पर मनीष ने देखा कि अजय के साथ शराब के नशे में धुत्त ललित गोस्वामी बैठा हुआ है। बीते 3 घंटों में ए एस आई ने अजय से भी एक दरखास्त मनीष के विरुद्ध लिखवाकर काग़जात तैयार कर लिये थे। अब ललित की मध्यस्थता में ए एस आई ने मनीष पर क्रॉस केस बनाने का दबाव डालकर उसे समझौता करने के लिये मजबूर कर दिया। समझौते में मनीष से यह भी लिखवा लिया कि वह यह समझौता बिना किसी दबाव के अपनी मन मर्ज़ी व खुशी से कर रहा है।

काग़जों के हिसाब से पुलिस ने अपना काम बिल्कुल सही व पुख्ता कर लिया और वसूली भी अच्छी खासी कर ली। लेकिन इसका दूरगामी प्रभाव क्या होगा, यह सोचने की जरूरत किसी को नहीं, प्रभाव जब होगा तब की तब देखी जायेगी।

इस घटना से जहां अजय की हौंसला अफ़ज़ाई हुई और उसे आगे भी लड़ाई-झगड़े करने की प्रेरणा मिली, वहीं शिकायतकर्ता का पुलिस एवं कानून व्यवस्था से विश्वास कम हुआ। पुलिस ने अपनी औकात बता दी कि वह रिश्वत खा कर कुछ भी कर सकती है, सांप को रस्सी व रस्सी को सांप बनाने में उसे कतई कोई परहेज नहीं, बशर्ते कि दाम सही मिल जायें।

उक्त मामला कोई अपवाद नहीं है और न ही ए एस आई कैलाश। लगभग हर थाने-चौकी में सारे कैलाश यही कुछ तो कर रहे हैं। और उनके ऊपर बैठे तमाम सुपरवाइज़री अधिकारी केवल खानापूर्ति करके अपने अपने हिस्से की 'फ़टीक' वसूली तक ही सीमित हैं।

विदित है कि अधिकांश जघन्य अपराधों के पीछे वे छोटी-मोटी मार-पीट आदि की घटनाएं होती है जिनका निदान पुलिस ने सही ढंग से नहीं किया होता। यदि पुलिस तमाम तरह के छुटमूट अपराधों को नियन्त्रित कर ले तो बड़े एवं जघन्य अपराध स्वत: नियन्त्रित हो सकते हैं।

हरियाणा में सुधरने लगी कांग्रेस की हालत

अनूप चौधरी

फ़रीदाबाद 24 सितम्बर। हरियाणा विधानसभा चुनाव आते-आते लोकसभा चुनाव में आई मोदी की खुमारी उतरने लगी। आम चुनाव के नतीजे के बाद लोप्रियता की बुलंदियों पर पहूंची भाजपा अब ढलान पर है। दल-बदलुओं के सहारे सत्ता में आने के सपना संजोये भाजपा अब सत्ता के करीब भी नहीं पहुंच पायेगी।

भाजपा और इनेलो के चुनावी उम्मीदवारों के एलान के बाद कांग्रेस के हरियाणा में तीसरी बार सत्ता में आने के आसार बढ गए हैं। भारतीय जनता पार्टी को आम चुनाव में हरियाणा की 10 संसदीय सीटों में से 7 पर जीत मिलने के बाद अपनी लोकप्रियता का गुमान हो गया। हालॉकि इस जीत में हजका भाजपा गठबंधन का महत्त्वपूर्ण योगदान था पर भाजपा ने इसे केवल और केवल मोदी की लोकप्रियता की जीत बताया। इस जीत के घमंड में भाजपा ने अपने पूराने सहयोगी हरियाणा जन हित कांग्रेस से नाता तोड़ दिया और कांग्रेस पार्टी के नेताओं को भाजपा में शामिल कर लिया। पार्टी अध्यक्ष अमितशाह के मंसूबे दलबदलुओं के सहारे हरियाणा में सत्ता हासिल करना है।

आम चुनाव से पहले प्रदेश में इंडियन नैशनल लोकदल की साख लगातार लोग़ों में बढ़ती जा रही थी। प्रदेश के लोग यह मान कर चल रहे थे कि इनेलो कांग्रेस का मजबूत विकल्प बनकर सत्ता में आयेगी। भाजपा और हजका सत्ता के काफ़ी करीब होंगे और कांग्रेस 15-20 सीटों पर सिमट कर रह जायेगी। आम चुनाव के नतीजों ने इनेलों का सत्ता में आने का खेल बिगाड़ दिया। दूसरे इनेलो सुप्रीमों ओमप्रकाश चौटाला और अजय सिंह चौटाला शिक्षक भर्ती घोटाला के चलते 10 साल की सज़ा में जेल में बंद हैं। ऐसे में नेतृत्व की कमी के चलते इनेलो रसातल में चली गई। इसका सीधा फ़ायदा कांग्रेस को हुआ। हजका भाजपा गठबंधन टूटने और इनेलो भाजपा गठबंधन न होने से कांग्रेस का ग्राफ़ प्रदेश में चढता चला गया।

मोदी सरकार ने चावल निर्यात पर रोक लगाकर धान की पैदावार करने वाले करीब 35 विधानसभा क्षेत्रों में किसानों की नाराजगी मोल ले ली। इसका सीधा फायदा कांग्रेस पार्टी को मिला। कांग्रेस सरकार के कार्यकाल के दौरान किसानों को धान का भाव उनकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा मिला तब हरियाणा में यह जुमला आम हो गया कि हुड्डा के राज में जीरी गयी जहाज में। इसके अलावा भाजपा ने हरियाणा में अलग गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी बनाने के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के फ़ैसले का विरोध कर सिख बाहुल इलाके में नाराजगी मोल ले ली। अलग गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी बनाने का सीधा फ़ायदा कांग्रेस को मिलना है इसके चलते कांग्रेस 25 प्लस आगे हो सकती है।

मोदी की पाठशाला

इस पांच सितम्बर को भूतपूर्व संघी प्रचारक और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शिक्षक दिवस को 'गुरु दिवस' में रूपांतरित करते बच्चों के लिए एक कक्षा आयेजित की। यह कक्षा पूरे देश में थी और सारे देश के बच्चे इसमें बैठे थे। आधुनिक संचार तकनीक प्रेमी मोदी ने इसके लिये इसका इस्तेमाल किया।

पर मोदी के लिए परेशानी की बात यह रही कि वे इसमें यह बात नहीं कह पाये जो वे कहना चाहते थे। वे बच्चों को वह शिक्षा नहीं दे पाये जो वे देना चाहते थे और जिस शिक्षा पर वे जीवनभर खुद चले थे।

मोदी की वह अनकही शिक्षा इस प्रकार है:-

पहला सबक : हमेशा स्वयं को सर्वोपरि रखो। याद रखो कि तुम्हें सबसे ऊपर पहुंचना है भले ही तुम चाय वाले के बच्चे ही क्यों न हो। इसके लिये सब कुछ जायज है-हजारों लोग़ों का कत्ल भी। इसके रास्ते में ईमानदारी, निष्ठा, नियम-कानून किसी को मत आने दो। इसके लिए हर किसी का इस्तेमाल करो और फिर उसे रास्ते से हटा दो। जो विरोध करे उससे किसी भी हद तक जाकर निपटो-उसको कत्ल करने या करवाने तक भी।

दूसरा सबक: नैतिकता की सारी बातें सीढ़ियों की तरह होती हैं जिन पर चलकर व्यक्ति ऊपर पहुंचता है। नैतिकता को व्यक्ति को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए। याद रखो कि नैतिकता व्यक्ति के लिए होती है, व्यक्ति नैतिकता के लिए नहीं होता। आर.एस.एस. की यह शिक्षा मानवता को अमूल्य योगदान है। दुनिया के सारे दार्शनिक इस पर बहस करते रहे पर इसका मर्म नहीं समझ पाये। संघ के प्रचारक ही इसे अच्छी तरह समझते हैं। वे समझते हैं कि नैतिकता की सारी बातें दूसरों के लिये होती हैं, खुद के लिये नहीं। यदि ऐसा नहीं होता तो चाय वाले का बेटा नरेन्द्र मोदी आज भी चाय ही बेच रहा होता, अपनी पार्टी के सारे लोग़ों को पछाड़कर प्रधानमंत्री नहीं बनता।

तीसरा सबक : नैतिकता की तरह धर्म भी इस्तेमाल करने की चीज़ है। जो धर्म का जितना अच्छी तरह इस्तेमाल करता है वही तरक्की की सीढ़ियां चढ़ता है। स्वयं धर्म के धंधे में और पूंजीवादी राजनीति में तो यह और भी जरूरी है। याद रखो कि धर्म आत्मिक या रूहानी चीज नहीं है और न ही इसका किसी ईश्वर या अल्लाह से लेना-देना है। ध्यान से देखोगे तो पाओगे कि ईश्वर या अल्लाह है ही नहीं या है भी तो वे धर्म के धंधेबाजों पर पूरी तरह निर्भर हैं। इसलिये निर्भय होकर धर्म का हर तरह से इस्तेमाल करो।

चौथा सबक : याद रखो कि अभी तक मुसोलिनी और हिटलर के बारे में जो बताया जाता रहा है वह सब गलत है। वह सब कम्युनिस्टों का झूठा प्रचार है। मुसोलिनी और हिटलर महान लोग थे। वे अनुकरणीय थे। पहले सबक को याद करोगे तो पाओगे कि उसका निष्कर्ष ही है मुसोलिनी या हिटलर जैसा बनना। उन्होंने अपने जीवन में अपना लक्ष्य हासिल कर लिया था। उनकी मौत पर ध्यान मत दो क्योंकि वह तो उनके दुश्मनों द्वारा अंजाम दी गयी थी।

पांचवा सबक : यह याद रखो कि वेदांत में कहा गया है कि यह दुनिया माया है। यहां कुछ भी यथार्थ नहीं है। सब भ्रम मात्र है। एक मात्र सत्य तुम स्वयं हो। इसीलिए स्वयं को किसी भी बात से परेशान मत होने दो। धर्म, नैतिकता इत्यादि के तुम्हारे पुराने संस्कार तुम्हें परेशान करेंगे जैसे उन्होंने महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन को किया था। इन पुराने संस्कारों से मुक्ति पा लो। जब तुम इनसे मुक्त हो जाओगे तो पाओगे कि तुम कुछ भी निर्मल मन से कर सकते हो। तुम्हें इस धरती पर ही मोक्ष मिल जायेगा।

प्यारे बच्चों! याज्ञवल्क्य के समय से भारतीय मनीषियों की शिक्षा का असली सार यही रहा है और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसी पर चलता है। पर लोग़ों के कुसंस्कारों के चलते उसे जो ऊपरी बातें करनी पड़ती हैं लोग उसे ही असली शिक्षा मान लेते हैं। यह गलत है। मैंने तुम्हें असली मंत्र से परिचित करा दिया है। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इस पर चलकर अपना जीवन सफल बनाओगे। तुममें से कोई एक मुसोलिनी, हिटलर या नरेन्द्र मोदी बनेगा।

नागरिक